Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2021, VOL-9/47

भारतीय प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली : एक गहन अध्ययन

बी के गुप्ता[1], Ph. D. & राजेन्द्र सिंह[2]

[1]एसोसिएट प्रोफसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल, पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी

[2]शोध छात्र, जवाहर लाल नेहरू, मेमोरियल, पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी

Paper Received On: 25 SEPT 2021

Peer Reviewed On: 30 SEPT 2021

Published On: 1 OCT 2021

Abstract

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को आदिकाल से ही प्रभावित करती आयी है और मनुष्य ने शिक्षा के द्वारा अपने ही समाज और संस्कृति विकास किया है। जिसका परिणाम आज का आधुनिक समाज है। शिक्षा समय, समाज, संस्कृति और देश की भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार बदलती रही है किन्तु आज हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो गयी है, जहाँ हम शिक्षा का अर्थ किसी स्कूल कालेज या विश्वविद्यालय में जाकर विभिन्न विषयों की दस या बीस–तीस पुस्तकें अध्यापकों से पढ़ लेना ही समझते हैं। जिस व्यक्ति ने इस नियत पाठ्यक्रम के अनुसार जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ी हैं और जितनी ऊँची परीक्षाएं पास की हैं वह हमारी दृष्टि में उतना ही अधिक शिक्षित या विद्वान है। आजकल लोगों का यही विचार है कि जो व्यक्ति अक्षरों से परिचित नहीं है और एक या कई भाषाओं को लिखने पढ़ने की योग्यता नहीं रखता वह कदापि शिक्षित नहीं कहा जा सकता है। परन्तु हमारी प्राचीन भारतीयशिक्षा व्यवस्था ऐसी न थी उसमें विद्यार्थियों को केवल किसी एक विद्या की शिक्षा नहीं दी जाती थी बल्कि उन्हें शिक्षा शारीरिक मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के विकास की शिक्षा दी जाती थी जिससे वे अपने जीवन में किसी भी कठिनाई का सामना कर सकें किन्तु आज की शिक्षा ऐसा करने में असमर्थ है। बी. सरन ने कहा है की, चाहे कितने भी अच्छे दिन क्यों न आये तब तक मातृभूमि का मुखमण्डल न चमकेगा जब तक की भारत की संस्कृति बोल न उठेगी जंगलों के गुरूकुलों में निवास करने वाले ऋषियों की भाषा में जागकर न कहेगी की उम्र अलौकिक संदेश और शिक्षा को फैलाओ गुरूकुल प्रणाली के सिद्धांत सदैव और सर्वत्र ग्रहणीय है प्रत्येक देश और प्रत्येक परिस्थिति में आज हमारी शिक्षा किसी अधेरी गुफा में अपने रास्ते से भटक गयी है। ऐसा क्यों? अतः हमें अपनी आधुनिक शिक्षा में कुछ दिशा एवं दशा परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जिसे हम इस लेख के माध्यम से दृष्टिपादित करने का प्रयत्न कर रहे है।

Keywords: *प्राचीन भारतीय शिक्षा, आधुनिक शिक्षण, गुरुकुल प्रणाली, विद्यालयी शिक्षा।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

माँ सरस्वती की वन्दना से लेकर गुरुकुल में योग्य गुरुओं से, मौखिक शिक्षा पाने वाले इस देश में शिक्षा का कितना महत्व है यह सर्व विदित है। यद्यपि समाज के वर्ण व्यवस्था पर आधारित होने के कारण हर वर्ग को शिक्षा पाने का अधिकार प्राप्त नहीं था। धीरे–धीरे समाज में परिवर्तन आया और वर्ण व्यवस्था का विरोध होने लगा। आज के समाज में शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकार बन गया है। भारतीय संविधान के अनुसार हर नागरिक को शिक्षा पाने का अधिकार है चाहे वह किसी भी जाति या

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

धर्म का हो। वर्तमान में समाज का ढांचा ऐसा बन गया है, कि जिसके पास साधन हैं वही शिक्षा और विशेषरूप से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। देश में तेजी से बढ़ रही जनसंख्या के कारण शिक्षा पाने वालों के अनुपात में अशिक्षित लोगों की संख्या अब भी बहुत ज्यादा है।

शिक्षा स्तर को उन्नत करने के लिए पहला आयोग 1948–49 में राधाकृष्णन आयोग के नाम से गठित हुआ था। इसके बाद वर्ष 1952 में दूसरा आयोग गठित हुआ इस आयोग को मुदालियर आयोग का नाम दिया गया। इनमें राधाकृष्णन आयोग ने विश्वविद्यालयीय शिक्षा क्षेत्र में काम किया जबकि मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा पर काम किया। इसके बाद कई शिक्षा आयोग गठित किये गये। शिक्षा आयोगों की शुरूआत ही गलत तरीके से हुई थी क्योंकि पहला आयोग विश्वविद्यालयीय शिक्षा पर विचार करने के लिए गठित किया गया था। जबकि उसे प्राथमिक शिक्षा के लिए यदि गठित किया जाता तो शायद अगले आयोगों की सार्थकता बढ़ती। शिक्षा को व्यावसायीकरण करने की सिफारिश सबसे पहले कोठारी आयोग ने की थी। इस आयोग ने 1964–66 के बीच कार्य किया। देश में यदि शिक्षा को बढ़ावा देना है तो हमें अपनी शिक्षा नीति में भारी बदलाव लाना होगा।

शिक्षा एक व्यापक विषय है। जिसमे शिक्षा का विस्तार बहुत बड़े स्तर पर है। हमारे यहाँ शिक्षा का महत्व बस यही है कि जिसने 5–10 किताबें स्कूल जाकर होने अध्यापक से पड़ ली तो समझा जायेगा की वो शिक्षित है। और जिसने जितनी अधिक स्कूल कॉलेज जाकर अपने अध्यापक से शिक्षा ली वो उतना ही अधिक शिक्षित है। आजकल लोगो का यही मानना है जो व्यक्ति अक्षरों से परिचित है वो शिक्षित है। और जिसको अक्षरों का ज्ञान नहीं वो हमारे यहां अशिक्षित है। मतलब किताबी शिक्षा होना हमारे देश में आवश्यक माना जाता है और जो यह योग्यता नहीं रखती कदापि शिक्षित नहीं कहलाता है। वास्तव में शिक्षा का संपर्क स्कूली पठन –, पाठन से ज्यादा नहीं है आजकल शिक्षा का अर्थ कोई अच्छी सी नौकरी करना है अथवा जो अच्छे पेशे के द्वारा जीविका अर्जन करना समझा जाता है, क्योंकि इन सभी कामो मे लिखना पढ़ना अनिवार्य होता है इसलिए आजकल इन कामों में सफल वाले व्यक्ति ही शिक्षित समझे जाते है।

हम शिक्षा पद्धति को दो रूपों में वर्णन करेंगे वैसे तो कई प्रकार की शिक्षा पद्धति है पर हम इसे दो वर्गो में बांटकर वर्णन करेंगे–

1. प्राचीन शिक्षा पद्धति
2. नवीन शिक्षा पद्धति

प्राचीन शिक्षा पद्धति

हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्त्वपूर्ण सभ्यताओं में एक है। इस सभ्यता के समुचित ज्ञान के लिए प्राचीन शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है जिसने इस सभ्यता को चार हजार वर्षों से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा, उसका प्रचार–प्रसार किया तथा

उसमें संशोधन किया। प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया। वैदिक युग से ही इसे प्रकाश का स्रोत माना गया जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित करते हुए उसे सही दिशा–निर्देश देता है। प्राचीन भारतीयों का यह दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा द्वारा प्राप्त एवं विकसित की गई बुद्धि ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती है। प्राचीन भारतीयों की दृष्टि में शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन थी। इसका उद्देश्य मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, अपितु मनुष्य के स्वास्थ्य का भी विकास करना था। प्राचीन विचारकों की दृष्टि में शिक्षा मनुष्य के साथ आजीवन चलने वाली वस्तु है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली नैतिकता से परिपूर्ण थी। मनुस्मृति में वर्णित है कि 'सभी वेदों का ज्ञाता विद्वान भी सच्चरित्रता के अभाव में श्रेष्ठ नहीं है, किंतु केवल गायत्री मंत्र का ज्ञाता पंडित भी यदि वह चरित्रवान है तो श्रेष्ठ कहलाने योग्य है।' पुरातन भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी के लिए शिक्षा की व्यवस्था कुछ इस प्रकार की गई थी कि प्रारंभ से ही उसे सच्चरित्र होने की प्रेरणा मिलती थी और वह तदनुसार अपने को विकसित करता था। वह गुरुकुल में आचार्य के सान्निध्य में रहता था।

आचार्य न केवल विद्यार्थी की बौद्धिक प्रगति का ध्यान रखता था, अपितु उसके नैतिक आचरण की भी निगरानी करता था। वह इस बात का ध्यान रखता था कि विद्यार्थी दिन–प्रतिदिन के जीवन में शिष्टाचार एवं सदाचार के नियमों का पालन करे। विद्यार्थी के समक्ष महापुरुषों व महान नारियों के उच्च चरित्र का आदर्श प्रस्तुत किया जाता था जिससे उसके चरित्र निर्माण में प्रेरणा मिलती थी। प्राचीन शिक्षा पद्धति को विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने में सफलता मिली थी। इसके द्वारा शिक्षित विद्यार्थी कालांतर में चरित्रवान एवं आदर्श नागरिक बनते थे। भारत की यात्रा पर आने वाले विदेशी यात्रियों– मैगस्थनीज, हुएनसांग आदि सभी ने यहां के लोगों के नैतिक चरित्र के समुन्नत होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। प्राचीन शिक्षा का एक उद्देश्य विद्यार्थी को व्यक्तित्व के विकास का पूरा अवसर प्रदान करना था। भारतीय व्यवस्थाकारों ने व्यक्तित्व को दबाने का कभी भी प्रयास नहीं किया। कुछ विद्वान ऐसा सोचते हैं कि यहां की शिक्षा पद्धति में कठोर अनुशासन के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को दबा दिया गया, जिससे उनका समुचित विकास नहीं हो सका। प्राचीन शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास का भी पूरा ध्यान रखा गया था। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी में आत्म–सम्मान, आत्म–विश्वास, आत्म–संयम, विवेक–शक्ति, न्याय–शक्ति आदि गुणों का उदय होता था जो उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायक थे। विद्यार्थी को भविष्य की चिंता नहीं सताती थी। उसके निर्वाह का उत्तरदायित्व समाज अपने कंधों पर वहन करता था। छात्र का लक्ष्य स्पष्ट एवं सुनिश्चित था। यदि वह व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करता तो उसकी वृत्ति पूर्व निर्धारित थी। यदि वह धार्मिक शिक्षा ग्रहण करता तो भी निर्धनता उसके मार्ग में बाधक नहीं थी। उसकी आवश्यकताएं सीमित होती थीं तथा समाज उनकी पूर्ति करता था।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विद्यार्थी सादा जीवन एवं उच्च विचार का आदर्श सामने रखता था। आत्मसंयम एवं आत्मानुशासन की प्रवृत्तियां भी व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती थीं। उसे अपने इंद्रियों की उच्छृंखल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखना पड़ता था। आहार, विहार, वस्त्र, आचरण आदि सभी को उसे नियमित करना होता था। शुद्धता एवं सादगी उसके जीवन के मुख्य ध्येय थे। भारतीय चिंतकों ने विद्यार्थी की प्रवृत्तियों एवं भावनाओं को अनावश्यक दबाने का प्रयास नहीं किया। आत्म–नियंत्रण एवं आत्मानुशासन से उनका तात्पर्य यथोचित एवं यथावश्यक आहार, विहार, वस्त्राभरण, निद्रा, शयन आदि से था। इससे विद्यार्थी को उच्छृंखल होने से बचाया जाता था। अध्यापक विद्यार्थी को प्रताड़ित करने के बजाय प्रेम एवं सद्भावना द्वारा सन्मार्ग में प्रवृत्त करता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक सुख एवं निपुणता को प्रोत्साहन प्रदान करना भी था। केवल संस्कृति अथवा मानसिकता और बौद्धिक शक्तियों को विकसित करने के लिए ही शिक्षा नहीं दी जाती थी, अपितु इसका मुख्य ध्येय विभिन्न उद्योगों, व्यवसायों आदि में लोगों को दक्ष बनाना था। भारतीय शिक्षा पद्धति ने सदैव यह उद्देश्य अपने समक्ष रखा कि नई पीढ़ी के युवकों को उनके आनुवंशिक व्यवसायों में कुशल बनाया जाए। सभी प्रकार के कार्यों के लिए शिक्षा देने की व्यवस्था प्राचीन भारत में थी। कार्य विभाजन के द्वारा विभिन्न शिल्पों और व्यवसायों में लोग निपुणता प्राप्त करने लगे जिससे सामाजिक प्रगति को बल मिला तथा समाज में संतुलन भी बना रहा। आर्य जाति की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य को सुरक्षित बनाए रखना था। भारत में वेद तथा अन्य धर्म ग्रंथ जिस प्रकार से आज तक जीवित हैं, उसकी समता किसी अन्य सभ्यता में देखने को नहीं मिलती है। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के उद्देश्य अत्यंत उच्च कोटि के थे। शिक्षा संबंधी प्राचीन भारतीयों का दृष्टिकोण मात्र आदर्शवादी ही नहीं, अपितु अधिकांश अंशों में व्यावहारिक भी था। यह व्यक्ति को सांसारिक जीवन की कठिनाइयों एवं समस्याओं के समाधान के लिए सर्वथा उपयुक्त बनाती थी। शिक्षा समाज सुधार का सर्वोत्तम माध्यम थी। वात्स्यायन के कामसूत्र में 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है जिनका अध्ययन सुसंस्कृत महिला के लिए अनिवार्य बताया गया है। ये पाकविद्या, शारीरिक प्रसाधन, संगीत, नृत्य, चित्रकला, सफाई, सिलाई–कढ़ाई, व्यायाम, मनोरंजन आदि से संबंधित हैं। कामसूत्र के अतिरिक्त कादम्बरी, शुक्रनीतिसार, ललितविस्तर आदि में भी 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का एक प्रमुख तत्त्व गुरुकुल व्यवस्था रही है। इसमें विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरु के घर पर निवास कर शिक्षा प्राप्त करता था। गुरु के समीप रहते हुए विद्यार्थी उसके परिवार का एक सदस्य हो जाता था तथा गुरु उसके साथ पुत्रवत व्यवहार करता था। परिवार के वातावरण से दूर रहने के कारण उसमें आत्म–निर्भरता की भावना विकसित होती थी। आज हमें गुरुकुल जैसी गुणपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को दोबारा जीवंत करने की जरूरत है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें असंवेदनशील बना रही है। नई शिक्षा नीति यदि इसमें भारतीयता का पुट लाने में कामयाब होती है तो यह अपने आप में एक अभूतपूर्व शैक्षणिक संयोग होगा

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

नवीन शिक्षा पद्धति

हमारे देश में राष्टीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी। और 1992 में संशोधित हो गई थी। तबसे लेकर अब तक इस निति में बदलाव हुए इसकी कुछ विशेषताएं है–

(1) बचपन की देखभाल

(2) शिक्षा का अधिकार

(3) स्कूल परीक्षा में सुधार

(4) शिक्षक प्रबंधक

(5) शिक्षा के क्षेत्र में आई .सी.टी.

(6) व्यवसाइक शिक्षा और प्रशिक्षण

(7) विकलांग शिक्षा

(8) प्रौढ़ शिक्षा

(9) रुक जाना नहीं

इस प्रकार अगर शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव किये गए है, सरकार चाहती है की हमारे देश में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित ना हो उसके लिए उसने कई नीतियों का कार्यवरण किया है , इसमें अभी हाल ही में रुक जाना नहीं एक नीति बनाई जो उन छात्रो के लिए है जो किसी न किसी कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते है या परीक्षा पास नहीं कर पाते हैं।

सन् 1964 – 1975 तक शिक्षा संम्बधी आयोग का गठन किया गया जिसमें 1986 में शिक्षा पद्धति लागू की गई इसे ही हम नई वर्तशिका पद्धति कह सकते हैं इसमें कई पूर्वकालीन शिक्षा संम्बधी विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया गया है और नई शिक्षा नीतियों पर प्रकाश डाला गया है .जो काफी हद तक सफल भी है।

उपसंहार

यदि देखा जाये तो हमारे देश में चाहे कितने भी बदलाव किये गए हो। पर शिक्षा पद्धति प्राचिन भी योग्य थी और नवीन भी जहाँ प्राचीन पद्धति में भारत विश्वगुरू कहलाता था। विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्त्रोत , अंतर्दृष्टि , अंतर्ज्योति , ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपनामो से विभूषित किया है। उस युग की ये मान्यता थी की जिस प्रकार अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशयो और मर्मो को दूर करने के लिए शिक्षा आवश्यक है। उसी प्रकार नवीन शिक्षा पद्धति में हमारा भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ था। हमारे कर्णधारों का ध्यान नई शिक्षा प्रणाली पर गया और उनके अनुसार ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए अनुकूल नहीं थी। गांधी जी ने कहा की शिक्षा से बच्चे का शारीरिक, मानसिक और नैतिक शिक्षा से विकास

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

करना है। तथा उन्होंने ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली में सुधार किया और कई समितियों बनाई जो की शिक्षा को एक नया आयाम दे सकें।

इस प्रकार अगर देखे तो जहाँ पुरानी पद्धति में छात्र कि गुरुकुल में जाकर शांत माहौल में शिक्षा ग्रहण करता था। वही आज नवीन शिक्षा पद्धति में छात्र देश के बाहर जाकर शिक्षा प्राप्त करके अपने देश में उसका प्रयोग करता है। इस प्रकार पहले के गुरु हो या आज के शिक्षक दोनों का ही मकसद अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देना तथा अच्छा ज्ञान देना है। उनका एक ही लक्ष्य होना चाहिए की उनका छात्र अच्छा ज्ञान अर्जित कर सके शिक्षा देने का कोई भी प्रकार हो चाहे वो नवीन पद्धति हो या प्राचीन पद्धति मकसद तो बस एक ही होना चाहिए अच्छी शिक्षा महत्वपूर्ण शिक्षा है ना की कुछ और।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

प्राचीन भारतीय शिक्षा की प्रशासनिक व्यवस्था (PDF). मूल से 11 मई 2018 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 11 मई 2018.

दिनकर, आर. सिंह (2015), संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद 211001

दुबे, एस. शरतेन्दु (2007), प्राचीन भारत में शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स 11. यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 2110021 ई., श्रीधरन एवं बब्लू, भ. (2017) मूल्यों की पुनः स्थापना, सेज भाषा पब्लिकेशन्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड बी.1ध आई –1 मोहन कोआपरेटिक इंडस्ट्रियल एरिया मथुरा रोड, नयी दिल्ली 110044

गुप्ता, एस.पी. तथा अल्का गुप्ता (2015), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एक डिस्ट्रीब्यूटर्स 11 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद– 211002.

गुप्ता एस. पी. तथा अल्का गुप्ता (2008), भारतीय शिक्षा का सफरनामा इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स 11 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद–211002

लाल, आर.बी. (2013), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ– दिल्ली पाण्डेय, आर. (2013), प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स 11. यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 211002

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language